IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

बुंदेलखंड की परंपरा और स्वतंत्रता संग्राम में लक्ष्मीबाई का योगदान

डॉक्टर अनिल कुमार
सहायक आचार्य
शिक्षा संस्थान
बुंदेलखंड विश्वविद्यालय झांसी

डॉक्टर आनंद कटारे
सहायक आचार्य
शिक्षा संस्थान
बुंदेलखंड विश्वविद्यालय झांसी

भूमिका:-

भारत वर्ष के उत्तरप्रदेश राज्य में बुन्देलखण्ड क्षेत्र में झाँसी जनपद का प्राचीनकाल से महत्वपूर्ण रहा रहा है महाराजा वीरसिंह जू.देव प्रथम के पूर्व बलवन्त नगर से विख्यात झाँसी नगर की मिट्टी सतयुग और त्रेता युग तथा वर्तमान में तपस्थली रही है और यह भूमि स्वतंत्रता संग्रामव सबसे बड़ी पहचान है।

मुंशी - अजमेरी के अनुसार :-

सर्वशक्ति - सम्पतिमयी कमनीय भूमि है ।
यह भारत का हृदय, रुचिर रमणीय भूमि है ।
पुरावृत्त से से पूर्ण पूर्ण परम प्रख्यात भूमि है ।
यह इतिहास प्रसिद्ध शौर्य- संघात भूमि हैं ।
यह स्वतंत्रता - सिद्धि हेतु कटिबद्ध भूमि है ।

झाँसी जनपद बुन्देलखण्ड का राजनैतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक ऐतिहासिक, साहित्यिक और विशेष-रूप से लोक कलाओं का पोषक गढ़ रहा है।

प्रानन प्यारे देस हमारे जै बुरेलखण्ड ।
उर्वर धर, तरखर, सरि, सरवर, गिरिवर अति उदण्ड ।
बुन्देलों की सुनो कहानी बुन्देलों की बानी में।
पानीदार यहाँ का पानी आग लगा दे पानी में

रानी लक्ष्मी बाई के जीवन से हमें नारी सोर्य वीरता की प्रेरणा मिलती है झाँसी की महारानी का व्यक्तित्व, अलोकिक नारी की दृढता । सबलता के अभिनव कीर्तिमान स्वतन्त्रता संग्राम के इतिहास इतिसूस में मे तलवार तलवार की की नोक नोक और किरगियो के रहते रच जाती है झाली जनपद को गर्नु है कि रानी लक्ष्मी बाई झाँसी की महारानी की लर उन्होंने आने अद्धितीय, शामः पराक्रम का अप्रतिम इतिहास रच डाला. पूरे युद्ध कालने राती अपने पुत्र दामोदर राव को अपनी पीठपर : वह बालक महान महान स्वतन्त्रता (नाम की एक बाहर ऐतिहासिक घसाओके संदर्भ झाली बसी लक्ष्मीवादी बाधे रही: राजा 4 गंगाधरराव की पहली

फिर विश्वातली. और भूमि मे तलवार चलाती शत्रु सेना सेलडी वीरागना लाई साक्षात काली की पली. युद्ध भूमि ने लक्ष्नी वार रूपने शर्मा २०० कौशल, स्पीतिक परिचर्यदेवी दिखायी देती ही ŋ

काशी की कन्या :- झौसी की महारानी लक्ष्मी बाई:-

1828 झाँसी की महारानी का जन्म 19 नवम्बर 1828 को काशी (वनारस) की धरती पर हुआ था। उनके पिता नाना साहब पेशवा कानपुर बिठूर के यहाँ कार्य करते थे। थे। पेशवा मनु के तेज स्वभाव घुडसारी युद्धकौशल से प्रभावित थे, इसीलिए उन्होने इनका नाम हैबीली रखा था. बिटूर में लक्ष्मीबाई ने हिंदी, संस्कृत, मराठी और युद्ध - कौशल का ज्ञान प्राप्त कर लिया था। मनु का विवाह 1842 में झाँसी के महाराजा गंगाधरराव के साथ हुआ। विवाह के पश्चात् उनका नाम लक्ष्मी बाई रखा गया। विवाह के बाद रानी झाँसी के परिवेश में रियासते और सियासत को पढ़ती रही और महल में चल रहे महत्वाकांक्षी वातावरण के समझते हुए अपना सामंजस्य बनाया, जीवन के उतार-चढ़ाव ही रानी को मुखर बनाते है ऐसी चिन्तक प्रतीत होती है, जिनमें नीति-निपुण, है। लक्ष्मीबाई जनप्रिय रानी, सौर्य पराक्रम से परिपूर्ण महारा लक्ष्मीबाई को एक नयी पहचान दिलाती है।

झौसी की महारानी : एक महान् क्रान्तिकारी :-

झाँसी के महाराजा गंगाधर राव की मृत्यु 1853 में हुई। इसके पश्चात् झाँसी की महारानी ने एक पुत्र को गोद लिया जिसका नाम नाम् दामोदर राव रखा गया। और लक्ष्मीबाई ने बागडोर संभाली। अंग्रेजी सरकार ने झाँसी को हड़पने का प्रयास किया, लेकिन रानी लक्ष्मी बाई ने हार नही मानी और झाँसी राज्य की रक्षा करने का निर्णय लिया लिया।

मैं अपनी झाँसी नाही दूंगी।

महाराज गंगाधर सराव की मृत्यु दिनांक से युद्धभूमि में जाने के मध्य की समय में महारानी लक्ष्मी बाई की प्रखरता, सुखरता तत्परता, रणकासल रचती रचावी वि. वीरागना का काल हें

स्वतंत्रता के समर में झाँसी की रानी के सहयोगी :-

झाँसी की आजादी की लड़ाई में प्रसिद्ध सहयोगी तात्या टोपे,गुलाम गोस खा , खुदा बक्स झलकारी बाई, मोती बाई, सुन्दर बाई, मुन्दर बाई ने रानी लक्ष्मीबाई अन्तिम समय तक साथ दिया।

वे झलकारी बाई ने युद्ध में रानीलक्ष्मी बाई का वेश बना कर अपनी बहादुरी रण कौशल के साथ युद्ध किया और लक्ष्मी बाई को किले से सुरक्षित बाहर निकाल दिया और झलकारी बाई युद्ध करते हुए वीर गति को प्राप्त हुई

झाँसी किले पर जनरल हीरोज ने अधिकार कर लिया, और झाँसी नगर में लूट, हत्या की निर्मम धटनाओं को अंजाम दिया गया। जनरल हीरोज ने अपकी कूटनीति के द्वारा झाँसी के कुछ सम्मात लोगों को अपनी ओर ला लिया। | और गद्दार मुखविरों बागी सरदार राव दूल्हा जु के कारण अग्रेज सरकार ने झण्डा फहरा दिया।

महारनी लक्ष्मी बाई का झाँसी से प्रस्थान :-

4 अप्रैल 1858 को महारानी लक्ष्मी बाई योधा के रूप में भाण्डेरी दरवाजे से बाहर निकलती है और अपने दत्तक पुत्र दामोदर राव को पीठ पर बाधकर युद्धभूमि में प्रवेश करते हैं। युद्ध भूमि में महारानी लक्ष्मीबाई रण कोशल वीरांगना लक्ष्मी बाई रण चंडी का रूप रखती है।

महारानी लक्ष्मीबाई कालपी पहुंचकर उन्होने तात्या टोपे से भेट की | रानी का लपी से ग्वालियर पहुँची। और ग्वालियर के किले पर अधिकार कर लिया बहाँ पर नानासाहब व अन्य सहयोगी एकत्र हुए उनके पास एक अच्छी सेना तोपे गोला बारुद था यदि

स्वतन्त्रता का युद्ध एकसाथ मिलकर लड़ा जाता को रानी लक्ष्मी वाई विजय होती लेकिन सभी राजाओ का सहयोग नही मिलने के कारण ग्वालियर के किले पर अग्रेजो अधिकार से गया था .

अन्तिम युद्ध और सहादतः 18 जून 1858 में महारानी लक्ष्मी बाई और अंग्रेज जनरल हीरोज कोटा की सराय में आमने-सामने थे। शातिर युद्ध - नीति में माहिर हीरोज ने अपने सैन्य - बल का आकलन किया, और उसे समझ में आया कि आमने-सामने के युद्ध में रानी लक्ष्मी बाई पर विजय पाना असम्फव है, इसलिए उसने युद्ध-नीति में बदलाव लाकर कुटनीति और छल-कपट का सहारा लिया दोनों सेनाओ में भयंकर युद्ध हुआ और लड़ते झाँसी की महारानी वीरगति को प्राप्त हुई। 18 जून 1857 को वीरागंना लक्ष्मीबाई ने अपने पुत्र को राम चन्द्र देशमुख और काशीबाई को सौंपते हुए कहा कि आप लोगे इसे सभाले यह झाँसी के महाराजा की अंतिम निशानी है। मेरे शहीद होने के पश्चात अंगेज मुझे छू न पाए यह शब्द झाँसी के रानी के अंतिम शब्द थे

बाबा गंगादास की कुटिया में झाँसी की महारानी, लक्ष्मीबाई की चिता तैयार की गई और बालक गंगाधर राव ने अपनी माँ को हर मुखानि दी। बावा गंगादास ने मंत्र उच्चारण कर स्वतंत्रता समर की अमर बलिदानी वीरांगना रानी लक्ष्मीबाई कर पुण्य पथ मार्ग प्रशस्त किया रानी लक्ष्मी बाई के शहीद हो जाने के बाद झाँसी पराधीनता की जड़ में बंध गयी

महारानी लक्ष्मी बाई के शहीद होने के बाद दामोदर राव ने अभिसप्त जीवन जिया उनकी बदहाली का जिम्देदार सिर्फ अंग्रेज फी नही स्वतन्त्रता के बाद की लोकशाही नोकर शाही हें दामोदर राव ने अपनी कहानी में लिखा की ज्योतिष ने बताया की में एक दिन रजा बनुगा यह बात मेरी जिन्दगी में दुर्भाग्यपूर्ण साबित हुई मुझे झाँसी के महाराज ने गोद लिया माँ साहेव ने ओपचारिकता पूरी की लोर्ड डलहोजी ने मुझे वारिस नही माना और झाँसी को अंग्रेजी शाशन में मिला लिया मेरे सहयोगी मुझे इंदौर ले गये 1860 ई० को 10000 की सालाना पेंशन अंग्रेजो ने प्रदान की उन्हें इंदौर से बहार जाने की अनुमति नही थी दामोदर राव के दिन भुत निगरानी रखते परकर बांके आज भी इन्दरिने झाली वाले उपनाम इस पाप रहते है रानी के एकलेले भारी सहिले भाई, चिन्तामनराव होवे थे वह परिवार सहित पुणे में रहता हो इझाली की रानी के वंशज इन्दीर के अतिरिक देश के कुछ भागो मे रहते है वे अपने काम के साथ लिखा करते हैं। दामोदर राव का उदारती.. राजीवन वमई 1906. ई. को इन्दीर मुनिमास होगा. भारत देश की आजादी के बाद 1947-19 अवतक काली काळी भी सरकार ने रानी के परिवार के लोग्य पर ध्यान 20 उदारती कठिनाई

नही दिया. दामोदर राव चित्रकार में उन्होने अपनी भी की याद के अनेक चित कारे जो आज भी झाली परि दामोदर तव के वंशजों ने बीरागना लेकी वाई परिवार की कुमूल्य धरोहर हो

के भूहान त्याग और बलिदान की गरिमा को बनाये रखा है उनके वंशज अपनी राजमाल लक्ष्मी वाई की भाडे जाडे अपने नाम के साथ झोली वाले लिखते आ रहे हो

लक्ष्झी वाई की वर्तमान बीटी आज भी झोली का गरिव अपने सिर माये पर पर्णमुकुट की भाति धारण किये है

झाँसी की महारानी लक्ष्मी बाई वीरता शोर्य वलिदान का संबाने बड़ा प्रतीक है

रानी लक्ष्मी वाई का जन्म काशी (बनारस) में हुआ लालन पालन पोषण कानपुर में हुआ विवाह के पश्चात वह वह झाँसी की महारानी लक्ष्मी बाई बनी और आजादी के लिए युद्ध करते ग्वालियर पहुंची और ग्वालियर कोटा की सराय में अंग्रेजो से सुद्ध करते हुए शहीद हो गयी रानी लक्ष्मी बाई की समाधी स्थल , फूलबाग ग्वालियर में वनी हे जो बीरता वलिदान शौर्य की जलती मिशाल है भारत देश की आत्मा मे बसता है रानी लक्ष्मी बाई का बलिदान ।

महात्मा गाँधी ने झाँसी आकर स्वतन्त्रता आन्दोलन के लिए सभा कर लोगो को लोगो को सम्वोधित किया और कहा कि रानी लक्ष्मीबाई का त्याग वलिदान भारत देश की आत्या में बसता है।

झाँसी केवल 1857 की क्रांति की भूमि एवं स्वतन्त्रता आन्दोलन के दोर में राष्ट्रीय चेतना का प्रमुख केन्द्र रहा इस दौरान महात्मा गाँधी ने झाँसी किले मे रानी लक्ष्मी बाई को नमन करते हुए श्रद्धा सुमन अर्पित किये झाँसी के सभी स्वतन्त्रता सेनानियों के बलिदान को नमन किया।

निष्कर्ष

रानीलक्ष्मी बाई के जीवन से भारतीय इतिहास में महिलाओं के नेतृत्व, युद्ध-कैशल, वीरता, महिला- सशक्तिकरण का महान उदाहरण हैं। उन्होने अपने साथ बलिदान, दृढ इच्छा-शक्तिसे यह सिद्ध कर दिया है। कि महिलायें भी देश का नेतृत्व कर सकती है उन्होने भारतीय स्वतंतता -संग्राम में सशक्त भमिकायें निभायी हें आज की युवा महिलायें उनके जीवने से सामाजिक - न्याय, समानता और स्वतंत्रता की भावना सीख सकती है। उनकी जीवनी यह सिखाती के न्याय लिए संघर्ष करना प्रत्येक देशवासीका कर्तव्य हैं। रानी लक्ष्मीबाई लक्ष्मीबाई की जीवन-यात्रा आज के समय प्रत्येक देशवासी के लिए प्रेरणा है। उनक बलिदान हमें यह बताता है कि न्याय, स्वतंत्रता के लिए किया गया संघर्ष सफल होता है।

1857 के स्वताला संग्राम मे रानी लक्ष्मीबाई ने निर्णायक रूप से ब्रिटिश शासन के खिलाफ युद्ध किया उनका साहस रणनीति, झाली की जनता की आशा बन गयी थी.

रानी लक्ष्मीबाई झाँसी की स्वतंत्रता के लिए कई युद्ध किये झाँसी ग्वालियर आदि में अपनी सेन्य छमता से कई युद्ध लडे:

1858 में ग्वालियर के युद्ध में रानी लक्ष्मीबाई शहीद होगई। अपने अन्तिम समय में घोड़े पर सवार तलवार विरोध जारी रखा। उनके बलिदान ने भारतीय स्वतंतता संग्राम के इतिहास में उनका नाम अमर कर दिया। इसी की महारानी का जीवन महिला नेतृत्व और सशक्तिकरण का प्रतीक है।

उन्होने यह सिद्ध कर दिया, कि महिलायें भी युद्ध के नेतृत्व कर सकती है। रानी लक्ष्मीबाई के जीवन का प्रभाव भारतीय महिलाओं को एक नया परिचय प्रदान करता है।

रानी लक्ष्मीबाई का जीवन अनेक महित्यिक - कार्य कविताओं नाटकों और फिल्मों को विषय रहा हें जनसंचार के माध्यमों के द्वारा रानी लक्ष्मीबाई के साहस, बलिदान की पहुँचाया जन-जन जाता है। जिसके द्वारा भारतीय महिलाये अपने अधिकारों के प्रति जागरूक होती है। आज के समय रानीलक्ष्मीबाई का उदाहरण महिला नेतृत्व, न्याय, समानताको सबसे बड़ा प्रतीक है।

मुष्यविशेषण वीरता नेतृब रूमी लक्ष्मी बाई सुरू के मैदान में अपनी सेनाका नेतृब करती थी. अपनी सेना का मनोबल बढाती थी.

रणनीतिक मुद्धा चालो को जानना में माहिर थी. रानी युद्ध मे कुशल नीति बचती ली वह छापामार, युद्ध, शत्रु की और जनता का विश्कस जीतने

उनके जीवन की कहानी हमें यह सिखाती है कि मनुष्य में नेतृत्व परिस्थितियों से उत्पन्न होता है, न कि पदों से। रानी लक्ष्मी बाई के जीवन की यात्रा, बारीक आज की भारतीय समाज के लिए प्रेणना का स्त्रोत हैं।

उनके जीवन दर्शने आजमी भारतीय मिट्टी के कुण कण मे सामाजिक, राजनैतिक चेतना मे वियमान है उनके जीवन से आज की महिलाये यह प्रेरणा पा सकती है कि आत्म विश्वास, साहस, शिक्षा, के द्वारा किसी भी स्थिति का सामना कर सकती है यदि महिलाओ को समान अवसर, शिक्षा मिल तो वे समाज में परिवर्तन ला सकती है।

सन्दर्भ सूचि :

चन्द्रा बिपिन→ भारत का स्वतन्त्रता संग्राम

वर्मा वृन्दावन लाल→ झाँसी की रानी लक्ष्मी बाई

महास्वेता देवी → द क्वीन ऑफ झाँसी

रेनर जेरोश → रॉ रानी ऑफ झाँसी

रानाडे प्रतिभा → रानी लक्ष्मी बाई बारियर क्यून ऑफ झाँसी

हरलीन सिंह → रानी लक्ष्मी बाई झौली लोक कथा इतिहास

जौयस लेला चैरमैन → द रानी झाँसी ए. स्टडी इन फीमेल हीरोइज्म इन इंडिया

www.google.com

www. up.govt.